

गौरि पुं. (तत्.) आंगिरस ऋषि।

गौरिक स्त्री. (तत्.) गोरा वि. सफेद सरसों।

गौरिका स्त्री. (तत्.) क्वारी लड़की, गौरी।

गौरिल पुं. (तत्.) 1. सफेद सरसो 2. लौह चूर्ण 3. लोहे का चूरा।

गौरिष्य पुं. (तद्.) 1. शिव, महादेव।

गौरी स्त्री. (तत्.) 1. गोरे रंग की स्त्री 2. पार्वती 3. आठ वर्ष की कन्या दूब 5. दारुहल्दी 6. तुलसी 7. गोरोचन 8. सफेद दूब 9. सफेद रंग की गाय 10. मजीठ, गंगा नदी 11. चमेली 12. सोन कदली 13. प्रियंगु नामक वृक्ष 14. पृथ्वी 15. बृद्ध की एक शक्ति का नाम 16. शरीर की एक नाड़ी 17. एक बहुत प्राचीन नदी जो पूर्वकाल में भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर थी और जिसका वर्णन वेदों और महाभारत में आया है 18. गुड़ से बनी हुई शराब, गौड़ी 19. वरुण की पत्नी 20. वाणी 21. एक प्रकार का राग जिसे गौरी राग कहते हैं 22. अनाहद चक्र की आठवी मात्रा।

गौरीशंकर पुं. (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम।

गौरीशिखर पुं. (तत्.) हिमालय पर्वत की वह चोटी जिस पर पार्वती ने तपस्या की थी।

गौरीसर पुं. (तद्.) हंसराज नाम की बूटी, सैमलपत्ती।

गौरिया स्त्री. (देश.) दे. गौरिया पुं मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गौलक्षणिक पुं. (तत्.) गाय बैलों के अच्छे बुरे लक्षणों को पहचानने वाला।

गौला स्त्री. (तद्.) गौरी, पार्वती, गिरिजा।

गौलिक पुं. (तत्.) 1. मुष्कक नामक वृक्ष 2. एक प्रकार का लोध।

गौल्मिक पुं. (तत्.) 30 सिपाहियों का नायक या अफसर।

गौल्य पुं. (तत्.) 1. शरबत 2. शराब।

गौशतिक पुं. (तत्.) सौ गायों का रखने वाला।

गौशृंग पुं. (तत्.) एक प्रकार का समगान।

गौष्ठीन पुं. (तत्.) पुरानी गौशाला का स्थान।

गौसम पुं. (फा.) कोसम का पेड़, कोसम पेड़ की लकड़ी।

गौसहस्रक पुं. (तत्.) सहस्र गाएँ रखने वाला या पालनेवाला।

गौहर पुं. (फा.) 1. मुक्ता, मोती, जौहर।

ग्मा स्त्री. (तत्.) पृथ्वी।

ग्यामन स्त्री. (देश.) दे. गामिन।

ग्यारस स्त्री. (तद्.) एकादशी तिथि।

ग्यारह पुं. (तद्.) दस और एक, दस और एक की सूचक संख्या जो इस प्रकार (11) लिखी जाती है।

ग्रंथ पुं. (तत्.) 1. पुस्तक, किताब 2. गाँड़, ग्रथिन।

ग्रंथकर्ता पुं. (तत्.) पुस्तक बनानेवाला 2. पुस्तक लिखने वाला।

ग्रंथकार पुं. (तत्.) दे. ग्रंथकर्ता।

ग्रंथन पुं. (तत्.) 1. दो चीजों को इस प्रकार जोड़ना कि गाँठ पड़ जाए 2. जोड़ना 3. गूँथना।

ग्रंथमाला स्त्री. (तत्.) एक ही स्थान से समय-समय पर प्रकाशित होने वाली एक ही प्रकार अथवा वर्ग की अनेक पुस्तकों की अवली या शृंखला।

ग्रंथलिपि पुं. (तत्.) एक प्रकार की लिपि जो दक्षिण में प्रचलित है टि. भारतीय प्राचीन लिपिमाला की भूमिका में इसके संबंध में कहा गया है कि यह लिपि मद्रास के इहाते के उत्तरी और दक्षिणी आर्कट, सलेम, त्रिचनापल्ली, मदुरा और तिन्नेवेल्लि ज़िलो में मिलती है ई.स. की सातवीं शताब्दी से 15 वी शताब्दी तक इसके कई रूपांतर होते हुए इससे वर्तमान ग्रंथलिपि बनी और उससे वर्तमान मलयालम आदि तुलु लिपियाँ निकली।

ग्रंथांतर पुं. (तत्.) अन्यग्रंथ, भिन्न ग्रंथ।

ग्रंथागार पुं. (तत्.) 1. पुस्तकालय 2. वह स्थान जहाँ विविध विषयों की पुस्तकें एकत्र हो।

ग्रंथान वि. (अ.) ग्रंथन 1. गूँथने की क्रिया 2. एक जगह नत्थी करना 3. जमा करना।

ग्रंथावलि स्त्री. (तत्.) ग्रंथालय, ग्रंथमाला।

ग्रंथावलोकन पुं. (तत्.) ग्रंथ का अध्ययन।